UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015 (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. –232-235

"प्रबंधकीय व्यक्तित्व विकास में सहायक जीवन मूल्य – एक अध्ययन"

प्रो (डॉ.) बबीता कड़किया
प्राचार्य, आइडिलिक इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, इंदौर

डॉ. वैभव मोड़क
सहायक प्राध्यापक, आइडिलिक इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, इंदौर

शोध सार

इस शोध पत्र में एक प्रबंधक के व्यक्तित्व के विकास हेतू जीवन मूल्यों के प्रभावों की व्याख्या की गयी है। वैश्वीकरण के इस दौर में व्यापार –व्यवसाय की मॉगों जैसे उपभोक्ताओं की रुचि, फैशन, दैनिक आवश्यकताओं, कार्य गुणवत्ता को बनाये रखने, व्यवसायिक अवसरों का लाभ उठाने एवं आधुनिक प्रतिस्पर्धी बाजार की चुनौतियों का सामना करने के लिए एक प्रबंधक का योग्य, अनुभवी एवं जागरुक होना अत्यंत आवश्यक है। प्रबंधक की प्रभावी निर्णयन क्षमता पर ही व्यवसाय का भविष्य निर्भर करता है। इस हेतू एक प्रबंधक का व्यक्तित्व प्रभावी एवं कुशल होना अनिवार्य है। एक व्यक्ति का व्यक्तित्व कई गुणों को परिलक्षित करता है जो कि वह अपने जीवन मे परिवार, सामाजिक वातावरण, कार्यस्थल एवं स्व–निर्मित जीवन मूल्यों, संस्कारों, सिद्धातों से ग्रहण करता है। ये मूल्य न केवल प्रबंधक के व्यक्तित्व की गरिमामय छवि बनाते है अपितु प्रबंधकीय कार्यो में नीति निर्धारण, कार्य–योजना, नेतृत्च क्षमता, समन्वय व नियंत्रण को प्राप्त करने में सफल बनाते है। सही मूल्य पर वस्तुओं व सेवाओं का उत्पादन एवं विक्रय, शुद्धता, ग्राहक सेवा तत्परता, नवीन उत्पाद सृजनात्मकता, आशावादी दृष्टिकोण, कर्तव्य बोध, ईमानदारी इत्यादि जीवन मूल्य व्यवसाय की ख्याति एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि करते है। एक व्यवसाय की प्रगति तभी सुनिश्चित है जब कि उसके प्रबंधक में उक्त गुणों का समावेश हो। एक कुशल प्रबंधक की संस्था का आर्थिक स्तर अकुशल प्रबंध वाली संस्था के निश्चित ही अधिक होगा। अतः व्यवसाय की सफलता पूर्णतः प्रबंधकीय व्यक्तित्व पर निर्भर करती है जिसके निर्माण में जीवन मूल्यों का अंतहीन योगदान होता है।

मुख्य शब्दावली: *व्यक्तित्व, जीवन मूल्य, व्यवसाय, प्रबंधकीय।*

प्रस्तावना

प्रत्येक व्यवसायी या उघमी लाभ प्राप्त करने के उद्देश्य से ही व्यवसाय संचालित करता है। व्यवसाय में वस्तुओं सेवाओं का उत्पादन, क्रय–विक्रय जैसी गतिविधियॉ संचालित की जाती है। प्रत्येक निर्माता या उघमी बाजार की मॉग, उपभोक्ताओं की रुचि व फैशन के अनुरुप आवश्यकताऐं जानकर उनके निर्माण में संलग्न होता है। उत्पादन के सभी तत्व या कारक व्यवसाय की आय पर निर्भर रहते है। संगठन, श्रम, पूॅजी, भूमि व स्वंय उघमी इसके अंतर्गत आते है। एक व्यवसाय की समस्त आय, प्राप्ति, लाभ एवं हानियों के लिए उसका उघमी या प्रबंधक ही उत्तरदायी होता है। लेखांकन की दृष्टि से पृथक इकाई अवधारणा के अनुरुप व्यक्तिगत व व्यवसायिक व्यवहारों का पृथक–पृथक अध्ययन एवं लेखा किया जाता है अतः किसी व्यवसाय की आर्थिक स्थिति , परिणामों व आधिक्य के स्तर का आकलन उसकी प्रबंधकीय योग्यता पर निर्भर करता है।

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015 (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. –232-235

प्रबंधक की बुद्धि, मनोवैज्ञानिक चिंतन, सामान्य ज्ञान, नेतृत्व क्षमता, निर्णयन क्षमता, उसके जीवन मूल्य व पहलू भी अपना धनात्मक व प्रत्यक्ष प्रभाव व्यवसाय की अर्जन क्षमता पर डालते है। एक व्यवसाय की प्रगति तभी सुनिश्चित है जब उसके प्रबंधकों में उक्त गुणों का समावेश होगा। एक कुशल प्रबंधक की संस्था का आर्थिक स्तर अकुशल प्रबंधक वाली संस्था से निश्चित ही अधिक होगा। अतः व्यवसाय की सफलता पूर्णतः प्रबंधकीय व्यक्तित्व पर निर्भर करती है जिसके निर्माण में जीवन मूल्यों का अंतहीन योगदान होता है।

साहित्य की समीक्षा

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मानव जन्म से लेकर मृत्यु तक किसी ना किसी तरह अपने आसपास के वातावरण , व्यक्तियों एवं वस्तुओं से जुडा रहता है। प्रत्येक मनुष्य अपनी आजीविका हेतू कोई ना कोई कार्य अवश्य करता है। किसी भी मनुष्य के जीवन मूल्यों को दो प्राथमिकताओं में बॉटा जा सकता है–

1. प्रथम मुद्रा या पैसा, स्थान, दूसरों की सेवा, परिवार के साथ समय बिताना इत्यादि। प्रत्येक मनुष्य अपनी आवश्यकताआ के अनुसार इन्हें वरियता देता है। जैसे कोई व्यक्ति अपने शहर में ही आजीविका हेतू कार्य करना चाहता है। इसका कारण परिवार की ओर ध्यान देना या उसके साथ अच्छा समय व्यतीत करना हो सकता है। अतः वह अन्यत्र जाना पसंद नही करता।
2. द्वितीय आजीविका सबंधी प्राथमिकताएँ जैसे सुर ा, आर्थिक स्थिति, विकास, वैयक्तिक विकास, सामाजिक दायित्व, प्रेरणा , ईमानदारी पूर्वक कार्य करना, कार्य संतुष्टि, स्पष्टता, आंकाक्षाएँ आदि।''जीवन मूल्यों से आशय उन मूल्यों से है जिन्हें हम अपने जीवन में पाना चाहते है जिन्हें हम अपने जीवन में पाना चाहते है। ऐसे व्यवसाय Õत्र या आजीविका जिनमें हम अपने जीवन मूल्यों को पूर्ण करना चाहते है हम वही चुनतें है।''हम कई जीवन मूल्य अपने माता–पिता, परिवार से ग्रहणा करते है तो कई बाहरी वातावरण जैसे व्यवसाय, कार्यस्थल, बाजार आदि से। एक व्यक्ति या व्यवसायी इन जीवन मूल्यों को अपनाकर सफलता के उच्च शिखर तक पहुॅच सकता है। किसी व्यक्ति या व्यवसायी या पेशेवर व्यक्ति हेतू आधारभूत जीवन मूल्य इस प्रकार हो सकते है–

जीवन मूल्यों की सूची :–

1. शुद्वता
2. आंकाक्षा
3. उपलब्धता
4. जागरुकता
5. स्पष्टता
6. साहस
7. कल्पनाशीलता / नवाचार / नवप्रवर्तन
8. इच्छाएँ
9. निर्देश
10. कर्तव्य
11. विश्वास
12. ईमानदारी
13. आर्थिक
14. प्रेरणा
15. सुरक्षा
16. विजय
17. शक्ति या ताकत
18. नेतृत्व
19. विकास
20. लोचता
21. नैतिकता
22. आदर

उद्देश्य

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015 (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. –232-235

इस शोध के मुख्य उद्देश्य निम्नाकिंत है :–

1. व्यवसायिक जटिलताओं, समस्याओं को बुद्धिमत्तापूर्ण तरीकों से सुलझाना ।
2. व्यवसायिक परिणामों को जीवन मूल्यों की कसौटी पर परखना या मूल्यॉकन करना।
3. प्रबंधकीय निर्णयों को सरल व सुविधाजनक बनाना।
4. प्रबंधकीय कौशल, चातुर्य व तकनीकों को विकसित करना।
5. निरंतर विकास, मनन–चिंतन व प्रबंधकों हेतू पथ प्रदर्शित करना।
6. व्यवसाय के सामाजिक दायित्वों का निर्वाह करना।
7. जीवन मूल्यों को संरक्षित करना व उन्हें अपनाने पर बल देना।

प्रबंधकीय कार्यो में जीवन मूल्यों का विश्लेषण

कार्य में ईमानदारी, समय की पाबंदी या प्रबंधन व्यक्ति की गरिमा व ख्याति साथ ही साथ उत्पादन की गुणवत्ता को भी बढाते है। किसी व्यवसाय के स्पष्ट क्रियाकलापों व ईमानदारी पूर्ण व्यवहारों से बाजार में उसकी ख्याति व ग्राहकों में वृद्वि होती है। ग्राहक के व्यवसाय पर विश्वास करने से उत्पाद की बिक्री भी बढने लग जाती है। वही एक ओर समय प्रबंधक हर कार्य को सही समय पर व प्रत्येक व्यवसायिक योजना को पहले से पूर्ण बनाकर रखने में योगदान देता है।

सामान्यतः व्यवसायिक/पेशेवर सबंधित जीवन मूल्य एवं प्रबंधकीय योग्यता

जीवन मूल्य	प्रबंधकीय योग्यता/गुण/व्यक्तित्व	कार्य
1. ईमानदारी	स्पष्टता, पूर्ण प्रगटीकरण की प्रथा, सही हिसाब–किताब रखना ।	व्यक्तियों के समूह के प्रति दायित्व का होना जिनका व्यवसाय में हित जुडा हुआ है जैसे लेनदार, पूर्तिकर्ता,अंशधारी, ग्राहक, ऋण्दाता इत्यादि्।
2. नेतृत्व	नेतृत्व कला, निर्देशन, आदेश देना, नियंत्रण ।	कर्मचारियों को प्रेरणा देना, उन्हें ऊर्जावान बनाये रखना, उनका मनोबल बढाना, उनकी आवश्यकताओं को पूर्ण करना ताकि व्यवसाय के पूर्वनिर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके। उन्हें कार्य के प्रति उत्तरदायित्व का बोध कराना एवं समूह कार्य को निष्पादित करवाना।
3. व्यक्तिगत विकास	अपनी कुशलताओं, क्षमताओं का प्रयोग करना एवं एक अच्छे मानवीय जीवन के रूप में ।	निरंतर सीखना एवं आगे बढने के लिए चुनौती पूर्ण कार्यो को करना।
4. सुरक्षा	योजनाबद्व तरीके से निवेश करना, बजटिंग व व्यापार–व्यवसाय, लेखा प्रणालियों का ज्ञान	व्यापारिक आय या लाभ को प्राप्त करना जिससे उत्पादन के विभिन्न साधनों जैसे पुॅजी, भूमि, संगठन, श्रम एवं साहसी को उसका पारिश्रमिक या प्रतिफल दिया जा सके।

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015 (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. –232-235

	होना, प्रबंध कार्य में दक्षता होना।	
5. सामाजिक	समन्वयता का गुण, सभी को साथ में लेकर चलने की कला, मृदु भाषी, कार्य को सरल बनाने की कला, कार्यो का उचित बंटवारा करना।	ऐसे समूह में मिलकर कार्य करना जिसका उद्देश्य स्वंय के हित या लक्ष्यों से बडा हो, प्रभावशाली एवं संरक्षित समूह कार्य।

कई बार बाजार की चुनौतियों, ग्राहक की मॉगो को पूर्ण करने में यदि समय प्रबंधन को ध्यान में रखा जाता है तो व्यापारी या व्यवसायी उन्हें सही समय पर पूर्ण कर सकता है यदि वह उस हेतू वह पहले से ही उत्पादन व विक्रय क्रियाओं में जुट जाता है। व्यवसाय के सामाजिक दायित्वों में व्यवसाय से जुडे लेनदारों, पूर्तिकर्ताओं को सही समय पर भुगतान करना, ऋणदाताओं को ब्याज का भुगतान करना, व्यापार स्थल के किरायें का भुगतान एवं ग्राहक उपभोक्ताओं को सही मूल्य पर उत्तम वस्तुऍ उपलब्ध कराना भी होता है। यही नही एक बार विक्रय हो जाने के पश्चात् भी व्यवसाय का उत्तरदायित्व विक्रयोंपरांत सेवाओं हेतू बना रहता है जिसके अभाव में उपभोक्ता निराशा महसूस करते है व स्थानापन्न या वैकल्पिक वस्तुऍ क्रय करने लग जाते है। इस कारण से बेची गयी वस्तु की बिक्री भी भविष्य में जाकर गिरने या कम होने लग जाती है।

निष्कर्ष

एक प्रबंधकीय व्यक्तित्व पर भी व्यवसाय का भविष्य निर्भर करता है। प्रबंधकीय व्यक्तित्व से आशय ऐसे गुणों से है जो किसी व्यवसाय के प्रबंधक में व्यवसायिक गतिविधियों के सुचारू रूप से चलाने के लिए आवश्यक होते है। इनमें एक योग्य संगठनकर्ता, नियोजनकर्ता, निर्देशात्मकता, नियंत्रणकर्ता, योजनाकर्ता, आदेशकर्ता, समन्वयकर्ता, कुशल सम्प्रेषणकर्ता, नेतृत्वकर्ता आदि गुणों का होना महत्वपूर्ण एवं नितांत आवश्यक है। यदि एक प्रबंधक जीवन मूल्यों को आत्मसात् कर उपरोक्त प्रबंधकीय कार्यो को संचालित करता है तो निश्चित ही उसके व्यक्तित्व का विकास तो होगाा ही अपितु व्यवसाय की सफलता का मार्ग भी प्रशस्त होगा।